SHIKSHA SAMVAD
International Open Access Peer-Reviewed & Refereed
Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
Volume-02, Issue-01, September- 2024
www.shikshasamvad.com

आधुनिक भारत के निर्माता पं0 जवाहर लाल नेहरू का एतिहासिक चिन्तन

मृदुला शर्मा
शोधार्थिनी
ग्लोकल विश्वविद्याल,
सहारनपुर, (उ0प्र0)

डॉ0 राजकुमार
शोध पर्यवेक्षक
ग्लोकल विश्वविद्याल,
सहारनपुर, (उ0प्र0)

सारांश

भारत प्राचीन काल से महान विद्वानों और राजनीतिज्ञों का देश रहा है। उन विद्वानों एवं राजनीतिज्ञों में पण्डित जवाहरलाल नेहरू का एक महत्वपूर्ण स्थान है। भारत की महान हस्तियों में उच्च कोटी के धनी, महानायक, प्रथम प्रधानमन्त्री का नाम स्वतंत्र भारत के महानायकों की सूची में हार्दिक श्रद्धा एवं सम्मान के साथ लिया जाता है। पण्डित नेहरू न केवल भारत के एक महान नेता थे, बल्कि यहां के जन–मानस में प्रेम, साम्प्रदायिक सौहार्द के अमिट संदेश के अग्रदूत थे। पन्द्रह अगस्त 1947 को वह स्वतंत्र भारत के प्रधानमंत्री बने।

पण्डित नेहरू को वह भारत मिला, जिसकी जटिलताओं को देखते हुए दुनिया के तमाम विशेषज्ञ यहां तक कह रहे थे कि मुल्क एक नहीं रह पायेगा। मगर नेहरू ने न केवल देश को एकजुट रखा, बल्कि उसे अपने पैरों पर खड़ा भी किया। उन्होंने उस गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की नींव रखी, जिसने शीतयुद्ध में फंसी दुनिया को एक नई दिशा दी। बड़े–बड़े विशेषज्ञ कहते हैं कि अगर नेहरू चाहते तो अपनी लोकप्रियता के चलते वह एक तानाशाह भी बन सकते थे, लेकिन उन्होंने लोकतन्त्र का लम्बा रास्ता चुना। पहले भारत को अग्रेजों की गुलामी से मुक्त कराया और प्रधानमंत्री बनकर भारत को आत्मनिर्भर देशों की श्रेणी में लाकर खड़ा कर दिया।[1]

नेहरू का जन्म और नेहरू नाम रखे जाने का कारण :–

इनका जन्म 14 नवम्बर 1889 को इलाहाबाद में एक कश्मीरी ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम मोतीलाल नेहरू था, जो कि इलाहाबाद हाईकोर्ट में एक सुप्रसिद्ध वकील थे, और इनकी माँ का नाम स्वरूप रानी नेहरू था।

नेहरू ने अपनी 'आत्मकथा मेरी कहानी' में इस बात का उल्लेख किया है कि स्वयं फरूखसियर ने उनके पुरखों को सन् 1716 में दिल्ली लाकर बसाया था। दिल्ली के चान्दनी चौक में उन दिनों एक नहर हुआ करती थी। नहर के किनारे बस जाने के कारण उनका परिवार नेहरू के नाम से प्रसिद्ध हुआ।[2]

अपने दादा गंगाधर के बारे में लिखा है कि वह 1857 के कुछ पहले दिल्ली में कोतवाल थे। गदर की मार–काट के कारण उनका पूरा परिवार पूरी तरह से बर्बाद हो गया था, और खानदान की निशानी के तमाम कागजात व दस्तावेज नष्ट हो गये थे। तत्पश्चात् इनका परिवार आगरा जाकर बस गया। 1861 में आगरा में इनके पिता मोतीलाल नेहरू का जन्म हुआ। उन्होंने बैरिस्टर की उपाधि हासिल की और इलाहाबाद हाईकार्ट में वकील बन गये थे। इनके पिता के मुन्शी मुबारक अली ने आत्मकथा के पृष्ठ नं० 5 पर अंकित जवाहर को पुरानी कहानियां सुनाई थीं, कि किस प्रकार 1857 के गदर में उनका परिवार बिखर गया, और मुसलमानों ने उनकी हिफाज़त न की होती तो उनके खानदान का नामोनिशान मिट गया होता।[3]

नेहरू का राजनैतिक आधार उनके पिता मोतीलाल नेहरू ने रखा था। वह एक प्रसिद्ध वकील के साथ–साथ एक स्वतंत्रता संग्राम सेनानी भी थे।

नेहरू के बाद का वंश :–

नेहरू की पत्नी का नाम कमला नेहरू था और इनकी इकलौती पुत्री स्वर्गीय श्रीमती इन्दिरा गांधी थीं। नेहरू का वंशवृक्ष इस तरह है।

पण्डित नेहरू

इकलौती पुत्री (इन्दिरा गांधी)

(दो पुत्र)

1. राजीव गांधी– राहुल गांधी (पुत्र), प्रियंका गांधी (पुत्री),
2. संजय गांधी– वरुण गांधी (पुत्र)।

भारत में प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद नेहरू जी 15 साल की उम्र में इंग्लैण्ड पढ़ने चले गये। वहां हैरो कॉलेज में 2 साल अध्ययन करने के बाद कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त की और वहीं से वकालत की पढ़ाई पूरी की।

भारत–निर्माण में नेहरू जी की भूमिका :–

भारत के वे लोग, जो देश को गुलामी से निकाल कर बाहर लाये और उसे आधुनिक राष्ट्र की तरह स्थापित करने में जी जान लगा दी, उनमें पण्डित जवाहरलाल नेहरू का नाम प्रमुख है। आजादी के पूरे दौर में नेहरू एक ऐसी शख्सियत बने, जो संघर्ष भी करते हैं और स्वप्नदर्शी के साथ–साथ कुशल प्रशासक भी हैं, तथा पूरे देश को सम्मोहित करने की क्षमता भी रखते हैं। उनके अन्दर एक अच्छे लेखक और एक दार्शनिक के तत्व भी विद्यमान थे। पन्द्रह साल तक का समय उनके जीवन का संघर्षहीन गुजरा, बाकी पूरी जिन्दगी वह संघर्ष करते नज़र आते हैं। ब्रिटेन में पढ़ाई के दौरान इटली के प्रसिद्ध क्रान्तिकारी गैरीबाल्डी इनके प्रेरणा–स्रोत बने। इनके बाद नेहरू जी पर जॉर्ज बर्नाडशाह, बर्टेण्ड रसेल, हैरोल्ड लास्की और कींस जैसे ब्रिटिश विचारों का भी असर पड़ा। नेहरू सन् 1912 में भारत लौट आये और इलाहाबाद हाईकोर्ट में वकालत शुरू की, लेकिन उनकी ज्यादा

रुचि कांग्रेस में थी, जो उस समय भारतीयों के आधिकारों के लिए लड़ रही थी। सन् 1916 में नेहरू, गांधी जी से मिले और सन् 1919 में इलाहाबाद होमरूल आन्दोलन के सचिव बने। नेहरू महात्मा गांधी के साथ खिलाफत और असहयोग आन्दोलनों में उनका समर्थन करते नज़र आये। चौरा–चौरी कांड के बाद जब मोतीलाल नेहरू ने चितरंजन दास के साथ मिलकर ''स्वराज पार्टी'' का गठन किया, तो नेहरू जी गांधी के साथ ही बने रहे और अपने पिता जी के साथ नहीं आये। जब समाजवादी सोच रखने वाले कुछ नौजवान नेताओं ने कांग्रेस के भीतर ''कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी'' बनाई, तो उनकी तमाम उम्मीदों के साथ नेहरू इसमें शामिल नहीं हुए और कांग्रेस में रहकर संगठन के बीच एक पुल का काम करते रहे, जिससे ये सभी लोग आज़ादी मिलने तक कांग्रेस से पूरी तरह जुड़े रहे। नेहरू को जब 1929 में कांग्रेस का अध्यक्ष बनाया गया, तो उन्होंने इस पार्टी को धार्मिक आज़ादी, अभिव्यक्ति की आज़ादी, कानून के समक्ष समानता, संगठन बनाने की आज़ादी जैसे लक्ष्य दिये, साथ ही उन्होंने ऐसे धर्मनिरपेक्ष भारत बनाने की बात की, जहाँ मज़हब, जाति, वर्ग, एवं वर्ण के आधार पर कोई मदभेद नहीं होगा। कांग्रेस के 1929 के लाहौर अधिवेशन में जहाँ उनको अध्यक्ष बनाया गया था, वहाँ रावी नदी के किनारे तिरंगा फहराते हुए जो भाषण उन्होंने दिया था, उसे आज़ादी के मुख्य भाषणों में से एक महत्वपूर्ण भाषण माना जाता है। इसी दौरान नेहरू ने भारत के राष्ट्रीय आन्दोलनों को दुनिया में चल रहे साम्राज्यवादी आन्दोलनों से जोड़कर भारत की आज़ादी में एक नई जान डाल दी। नेहरू इसकी लक्ष्यपूर्ति के लिए दुनिया भर में सम्पन्न हुए अनेक समारोहों में भी शामिल होते रहे। इसका नतीजा यह रहा कि कांग्रेस के भीतर भी एक अन्तरराष्ट्रीय नज़रिया विकसित हुआ। 1912 से 1928 तक की अवधि में नेहरू कांग्रेस के साथ एक कनिष्ठ नेता के रूप में भूमिका निभाते रहे। गांधी जी को यह अपना गुरू मानते थे, और उस समय तक नेहरू की पहचान केवल उत्तर प्रदेश तक ही सीमित थी, जैसे गुजरात में सरदार पटेल एक गुजराती नेता के रूप में माने जाते थे। लेकिन 1927 में कांग्रेस के सम्मेलन में नेहरू वह पहले नेता थे, जिन्होंने पूर्ण स्वराज की मांग उठाकर अंग्रेजों की गुलामी की बेड़ियों को तोड़ने की आवाज़ उठाई। लेकिन गांधी जी उनके इस विचार से सहमत नहीं हुए और कांग्रेस ने इस मांग को पास नहीं किया। 1928 के अधिवेशन में भी पूर्ण स्वराज की मांग नेहरू ने बड़े उत्साह से उठाई, लेकिन गांधी जी ने नेहरू को विश्वास में लेकर 1929 तक का एक साल का समय ब्रिटिश सरकार को दिया, वरना फिर गांधी जी नेहरू के साथ मिल कर अंग्रेजों की जड़ें उखाड़ने का काम करेंगे। लेकिन सरकार ने उनकी बात नहीं मानी और 1929 में पूर्ण स्वराज का प्रस्ताव गांधी जी की सहमति से पास किया गया। 1926 से 1928 तक नेहरू कांग्रेस के महासचिव रहे। 1928 के बाद नेहरू को एक राष्ट्रीय नेता के रूप में माना जाने लगा, क्योंकि अब वह एक सक्रिय नेता की तरह राष्ट्रीय स्तर की भूमिका निभा रहे थे। 31 दिसम्बर 1929 के लाहौर अधिवेशन में इंकलाब जिन्दाबाद के नारों से पूरा अधिवेशन गूंज उठा और भारत को आज़ाद कराने की शपथ ली गयी। आज़ादी मिलने तक चैन से नहीं बैठने का प्रण लिया गया। 26 जनवरी 1930 को कांग्रेस की कार्यकारिणी की बैठक हुई और नेहरू ने 26 जनवरी को हर वर्ष स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाने का निर्णय कांग्रेस में पास कराया। 1930 से 1934 तक का समय नेहरू जी ने जेल में बिताया, क्योंकि वह एक सक्रिय नेता के रूप में नमक कानून तोड़ने में अग्रणी नेता थे। यह उनकी पहली जेल यात्रा थी। पूरे स्वतंत्रता आन्दोलन में नेहरू जी ने 9 साल जेल में गुजारे। तीनों सविनय अवज्ञा आन्दोलनों में नेहरू जी जेल में रहे। 1935 में नेहरू के नेतृत्व में कांग्रेस ने प्रांतीय चुनाव में भारी जीत हासिल की। लगभग सभी राज्यों में कांग्रेस की सरकारें बनीं।

अब नेहरू की ख्याति दूर–दूर तक फैल गयी और अब नेहरू जनमानस के नेता बन चुके थे। बाद में उन्होंने कांग्रेस के भीतर एक विदेशी मामलों का विभाग भी बनाया, जिसका अध्यक्ष राममनोहर लोहिया को बनाया गया। 1936 व 1937 के कांग्रेस के अधिवेशनों की अध्यक्षता भी पण्डित नेहरू ने की। अब सभी नेताओं को नेहरू में एक दूरदर्शी, कर्मठ, जुझारू, कुशाग्र बुद्धि, कुशल नेतृत्व के धनी का व्यक्तित्व नज़र आने लगा था।

भारत को आज़ाद कराने की यह लड़ाई बहुत लम्बी चली और चुनौतियाँ लगातार बढ़ती रहीं। एक तरफ जहाँ अंग्रेजों से लोहा लेना पड़ रहा था, तो दूसरी तरफ मुस्लिम लीग भी रोज नई–नई कठिनाईयां खड़ी कर रही थी, जिसके नेता मौहम्मद अली जिन्ना लगातार पाकिस्तान की मांग कर रहे थे। संघर्ष के इस दौर में उनकी कई जेल–यात्रायें भी हुईं। जब पंजाब में महन्तों के खिलाफ चल रहे सिक्खों के गुरू द्वारा आन्दोलन का समर्थन करने गये, तो अंग्रेजों ने उन्हें पकड़ कर जेल में डाल दिया था। 1942 में गांधी जी ने नेहरू को अपना राजनैतिक उत्तराधिकारी घोषित किया। 1942 में भारत छोड़ो आन्दोलन के दौर में नेहरू 2 साल से भी अधिक जेल में रहे और वहीं से अपनी इकलौती पुत्री इन्दिरा गांधी को अनेक लम्बे–लम्बे पत्र लिखे, जिनको बाद में संकलित करके एक किताब बनाई गयी।[4]

द्वितीय विश्वयुद्ध के अन्त होते–होते ब्रिटिश सरकार यह अनुभव कर चुकी थी कि अब लम्बे समय तक भारत को उपनिवेश बनाये रखना सम्भव नहीं होगा, और 1946 में केबिनेट मिशन भारत आया, जिसका उद्‌देश्य भारतीयों को सत्ता सौंपना था। इसी मकसद के तहत 1946 में विधान सभाओं के चुनाव हुए। नेहरू के नेतृत्व में इस चुनाव में कांग्रेस ने अच्छा प्रदर्शन किया। इस चुनाव में कांग्रेस को 923 और मुस्लिम लीग को 425 सीटें मिलीं। अन्तरिम सरकार का गठन हुआ, जिसमें गांधी जी की सहमति से नेहरू को प्रधानमंत्री पद से सुशोभित किया गया।[5]

ब्रिटिश सरकार भारत को संयुक्त प्रांतों का दृष्टिकोण अपनाते हुए अपनी कूटनीति से बालकनीकरण करना चाहती थी। बालकन देशों के बंटवारे ने यूगोस्लाविया को तोड़ दिया था। इसी तरह वह भारत को प्रान्तों में बांटना चाहते थे, जिससे राज्यों के पास ज्यादा शक्ति होती और केन्द्र कठपुतली की तरह साबित होता। लेकिन पण्डित नेहरू अंग्रेजों की चाल समझ चुके थे। उन्होंने देश का विघटन होने से बचाया। लेकिन देश का दो जगह बंटवारा नहीं रोक पाये। देश जब 15 अगस्त 1947 को आज़ाद हुआ, तो गांधी, नेहरू और पटेल में कोई भी यह नहीं चाहता था कि देश का बंटवारा हो। इस दिन पण्डित नेहरू ने 'वायसराय लोज' मौजूदा राष्ट्रपति भवन में ''नियति से साक्षात्कार'' नाम से जो प्रसिद्ध भाषण दिया, उसे दुनिया के सबसे प्रसिद्ध भाषणों में शुमार किया जाता है। उन्हें जो भारत मिला, वह बहुत खस्ता हाल में था। कोई भी यह मानने को तैयार नहीं था कि पण्डित नेहरू इसकी अखण्डता को बचा पायेंगे। नेहरू के लिए सबसे सकारात्मक पहलू यह था कि उन्हें आज़ादी के आन्दोलनों से एक मंझा हुआ मंत्री मण्डल मिला था, जिसमें वैचारिक रूप से सभी लोग महान तो थे ही, साथ ही साथ कुशल नेतृत्व के धनी भी थे। उनके सबसे बड़े सहयोगियों में सरदार वल्लभ भाई पटेल, मौलाना आज़ाद, डॉ० अम्बेडकर, रफी अहमद किदवई जैसे बड़े नाम शामिल थे। उस समय देश के सामने सबसे बड़ी चुनौती 500 रियासतों को खत्म करके एक अखण्ड भारत के रूप में सूत्रपात करना था। इसकी जिम्मेदारी पण्डित नहेरू ने सरदार वल्लभ भाई पटेल को सौंपी, क्योंकि उप प्रधानमंत्री (गृह मंत्री) का पदभार उन पर था। उन्होंने नेहरू के सहयोग से अपनी जिम्मेदारी को बखूबी निभाकर सभी रियासतों का केन्द्रीकरण कर डाला, इसलिये उनको

लौहपुरूष की संज्ञा दी गयी। इन्होंने कश्मीर और हैदराबाद की बाधाओं को भी पार किया। भारत के विभाजन के बाद सबसे बड़ी समस्या देश के अलग–अलग हिस्सों में साम्प्रदायिक दंगों का होना था। इनको शान्त करने के लिए गांधी जी दंगाईयों के बीच कूद पड़े और एक हद तक दंगों को शांत किया। लेकिन उन्हें देश के बंटवारे का मुआवज़ा अपने प्राण गवां कर देना पड़ा।

अब गांधी जी के गुजर जाने के बाद देश को जोड़े रखने की जिम्मेदारी सरदार पटेल और नेहरू के कंधों पर आ गयी। दोनों का मकसद भारत को एक ऐसा राष्ट्रवाद देना था, जिसमें साम्प्रदायिकता के लिए कोई स्थान न हो और नेहरू यह दाग़ मिटाने में बहुत हद तक सफल भी हुए। उनके 17 साल के प्रधानमंत्री कार्यकाल में एक भी साम्प्रदायिक दंगा नहीं हुआ। 1950 में पटेल भी साथ छोड़कर चले गये अब राष्ट्र–निर्माण का काम नेहरू को अकेले ही करना था। प्रजातंत्र के लिए नेहरू ने कितनी मेहनत की, इस बात को 1952 के आम चुनाव में देखा जा सकता है। नेहरू ने पूरे भारत का भ्रमण किया और घर–घर जा कर जनता का दुख बांटा। इनकी लोकप्रियता इतनी बढ़ गयी थी कि 1952 के आम चुनाव में कांग्रेस पार्टी ने इनके नेतृत्व में प्रचण्ड बहुमत हासिल किया। इनके सुशासन का सबसे अच्छा उदाहरण इनकी विदेश नीति रही। इन्होंने उस गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की नींव रखी, जिसने शीतयुद्ध में फंसी दुनिया को एक नई दिशा दी। चीन के साथ 1962 के युद्ध में भारत को हार जरूर देखनी पड़ी, लेकिन वह नेहरू ही थे, जिन्होंने विषम परिस्थितियों में देश को हार सहन करने की क्षमता प्रदान की। इसके लिए इन्होंने पूरे देश में सभाएँ कीं और अपने और जनता के दुख को आपस में बांटा तथा एक उदारवादी सोच भारत के लोगों को उपहार में दी, जिसके बल पर भारत दुनिया के सबसे शक्तिशाली देशों में से एक देश उभर कर सामने आया। इतिहास के दर्शन करने पर पता चलता है कि 1930 के आस–पास से पाकिस्तान शब्द की उत्पत्ति उर्दू शायर इकबाल ने की थी।[7]

एक तरफ मुस्लिम लीग एक कट्टरपंथी पार्टी के रूप में मुस्लिमों का प्रतिनिधित्व कर रही थी, तो दूसरी तरफ हिन्दू महासभा कट्टरपंथी संगठन इस मांग को आगे बढ़ाते हुए धार्मिक आधार पर हिन्दू और मुस्लिमों के लिए अलग देश की मांग कर रहे थे। सन् 1937 में अहमदाबाद में हिन्दू महासभा के अधिवेशन में विनायक दामोदर सावरकर ने कहा था ''भारत आज एक यूनिटेरियन और समरूप राष्ट्र नहीं हो सकता है यहाँ दो राष्ट्र होंग। एक हिन्दू और एक मुस्लिम''।[8]

इसके बाद 1945 में भी सावरकर ने फिर से टू नेशन थियोरी का समर्थन किया और कहा ''दो राष्ट्र के मुद्दे पर मेरा जिन्ना से कोई मदभेद नहीं, हम हिन्दू अपने आप में एक राष्ट्र हैं और यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि हिन्दू और मुस्लिम अलग–अलग राष्ट्र हैं''।[9] जबकि कांग्रेस धर्मनिरपेक्षता के सिद्धान्त पर चलकर हिन्दू मुस्लिम एकता एवं एक राष्ट्र की बात करती चली आ रही थी। गांधी, नेहरू ने भारत के बंटवारे के प्रस्ताव को सिरे से खारिज कर दिया था, लेकिन 1946 में हुए चुनाव ने परिस्थितियां बदल दी थीं। इस चुनाव में कांग्रेस को 923 और मुस्लिम लीग को 425 सीटे मिलीं। इसके बाद पाकिस्तान की मांग ने और जोर पकड़ लिया, क्योंकि बंगाल और पंजाब में मुस्लिम लीग को प्रचण्ड बहुमत मिला था। अब अवसर को तलाशते हुए हिन्दू कट्टरपंथियों को मौका मिल गया और उन्होंने इस मुद्दे को खूब हवा देना प्रारम्भ कर दिया। गाँधी जी ने जब देखा कि माउण्टबेटन के दबाव में कांग्रेस के नेता आ चुके हैं, तो उन्होंने कहा था– ''यदि कांग्रेस विभाजन स्वीकार करना

चाहती है तो यह मेरे मृत शरीर पर होगा। जब तक मैं जीवित हूँ, मैं भारत–विभाजन को कभी सहमत नहीं होऊंगा''।[10]

लेकिन परिस्थितियां कुछ ऐसी बनीं कि दो माह की बातचीत के बाद गाँधी जी और पण्डित नेहरू को विभाजन का दंश झेलना पड़ा, क्योंकि हिन्दू–मुस्लिम दंगों के रक्तपात ने उनकी भावनाओं को तोड़कर रख दिया था और फिर अपनी अन्तरआत्मा के विपरीत जाकर ''5 अप्रैल 1947 को गांधी ने लार्ड माउण्टबेटन को एक पत्र लिख कर कहा कि वह जिन्ना को भारत का प्रधानमंत्री बनाने को तैयार हैं, लेकिन भारत का विभाजन मंजूर करने को तैयार नहीं है''।

वरिष्ठ पत्रकार शाहजैब जिलानी के अनुसार ''जिन्ना को असुरक्षा थी कि वह प्रधानमंत्री तो बन जायेंगे, लेकिन अंग्रेजों के जाने के बाद हिन्दू बहुसंख्यक चुनाव में उनको वोट नहीं देंगे। ऐसे में सत्ता उनके हाथ से निकल कर फिर से हिन्दुओं के हाथ में चली जायेगी और मुस्लिमों का राजनीतिक प्रतिनिधित्व समाप्त हो जायेगा। ऐसे में अलग देश से ही मुस्लिमों के हितों की रक्षा हो सकती है''। जिन्ना गांधी को हिन्दू महासभा के नेताओं की तरह ही समझने लगे थे। वीर सावरकर की सोच का उन पर विपरीत प्रभाव पड़ चुका था। अब जिन्ना अपनी मांग से हटने को तैयार नहीं थे। उधर हिन्दू महासभा हंगामा काट रही थी। ऐसी दशा में जब हिन्दू–मुस्लिम को लेकर देश नफरत की आग में झुलस रहा था, तभी लार्ड माउण्ट बेटन ने कांग्रेस के नेताओं पर दबाव बनाया और देश का बंटवारा करने के लिए विवश कर दिया। गांधी जी ऐसा कभी नहीं चाहते थे। नेहरू और गांधी ने फिर भी अपनी दूरदर्शिता से भारत में रहने वाले मुस्लिमों में से लगभग 45 प्रतिशत लोगों को कांग्रेस की विचारधारा से जोड़े रखा और जिन्ना को टूटा–फूटा पंगू पाकिस्तान थमा दिया, तथा भारत का दिल कहे जाने वाले क्षेत्रफल को अपने पास रखने में कामयाब रहे।[11]

कुछ आलोचकों का मत है कि स्वतंत्र भारत के प्रधानमंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल को बनाना चाहिये था। सन् 1946 के चुनाव के बाद अधिकतर प्रदेशों की कांग्रेस की कार्यकारणियाँ सरदार पटेल को प्रधानमंत्री बनाने के पक्ष में थीं, जबकि केन्द्रीय कार्यकारिणी जवाहरलाल नेहरू के पक्ष में थी। ऐसे में महात्मा गांधी ने अपनी सूझबूझ का परिचय देते हुए पंडित नेहरू को प्रधानमंत्री के लिए प्रस्तावित कर दिया। दूसरी तरफ सरदार पटेल खुद भी नेहरू को प्रधानमंत्री बनाने के पक्ष में थे। और अगर सरदार पटेल को प्रधानमंत्री बना भी दिया जाता, तो 2 साल बाद ही प्राकृतिक कारणों से पटेल की मृत्यु हो गयी थी, फिर भी नेहरू ही प्रधानमंत्री बनते, और जो काम उन्होंने गृहमंत्री रहते किया, वही काम वह प्रधानमंत्री बनकर भी करते। क्योंकि बिना नेहरू के विचार–विमर्श के सरदार पटेल किसी कार्य को अंजाम नहीं देते थे, दोनों एक सिक्के के दो पहलू थे।

14 अगस्त 1947 की रात भारतीय संघ की संविधान सभा की बैठक हुई। स्वतंत्रता के अवसर पर सभी नेताओं के मध्य जवाहरलाल नेहरू जी ने कहा था ''अर्द्धरात्री के समय जब दुनिया सो रही होगी, भारत को नव जीवन और आज़ादी मिलेगी। इतिहास में कुछ क्षण ऐसे होते हैं, जो विरले ही आते हैं, जब हम प्राचीनता से नवीनता की तरफ अग्रसर होते हैं, जब एक युग समाप्त होता है और चिरकाल से दमित राष्ट्रीय आत्मा मुखर हो उठती है। यह उपयुक्त ही है कि इस अवसर पर हम भारत तथा भारत के लोगों की सेवा और यहां तक कि मानवता के अपेक्षाकृत अधिक बड़े उद्देश्य के लिए समर्पण का प्रण लें।''[12]

मेरी राय में जवाहर लाल नेहरू का प्रधानमंत्री बनना और पटेल का उप प्रधानमंत्री बनना बिलकुल सही था। नेहरू का चयन प्रधानमंत्री के रूप में सर्वश्रेष्ठ कार्य रहा था, क्योंकि वह पक्षपातविहीन प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। उन्होंने अपने मंत्रीमण्डल में उन लोगों को भी शामिल किया, जो कि उनकी विचारधारा के हमेशा विपरीत रहते थे, जैसे– डॉ० अम्बेडकर, और श्यामाप्रसाद मुखर्जी, जो हिन्दू महासभा से थे, जिनकी सरकार बनाने में कोई महत्वपूर्ण भूमिका भी नहीं थी, क्योंकि ये अलग दल से थे और कांग्रेस पूर्ण बहुमत में थी। इनको मंत्री बनाकर नेहरू ने दिखा दिया था कि नेहरू जाति, धर्म, क्षेत्र, भाषा, नस्ल, वर्ग, और वर्ण से पक्षपातरहित इंसान थे। इनके अलावा नेहरू ने अपने मंत्रीमण्डल में दो मुस्लिम व एक सिख को भी जगह दी। इस तरह हम देखते हैं कि नेहरू ने भारत को श्रेष्ठ दशा ही नहीं, बल्कि दिशा भी प्रदान की।

पण्डित नेहरू ने विश्वविद्यालय व वैज्ञानिक संस्थान बनाये, जो भारत की आज भी सबसे बड़ी पूंजी साबित हो रहे हैं। नेहरू के लोकतांत्रिक संस्थाओं की नींव रखने के कार्य की सबसे अधिक सराहना पूरे विश्व में की गयी। उन्होंने न सिर्फ विधान सभाओं में और संसद में भी बहस व विमर्श की परम्परा को मजबूत किया, बल्कि देश को एक ऐसा चुनाव आयोग दिया, जिसकी निष्पक्षता सन्देह से परे रही है। उन्होंने ऐसी न्यायपालिका की नींव रखी, जो राजनीतिक हस्तक्षेप से दूर रही। नेहरू ने देश को ऐसी फौज दी, जिसकी तुलना विश्व की उत्तम सेनाओं में की जा सकती है, और एक सबसे खूबसूरत बात यह थी कि उन्होंने एक दलित के द्वारा लिखित संविधान भारत में लागू करके समानता का संदेश दिया तथा प्रत्येक बालिग़ व्यक्ति को वोट देने का अधिकार प्रदान किया, जिससे भारत दुनिया का पहला वह देश बना, जिसने प्रत्येक वयस्क को वोट डालने का अधिकारी बनाया। उस समय तक किसी भी देश ने महिलाओं को समान मताधिकार नहीं दिया था, लेकिन नेहरू ने यह कर दिखाया। अगर नेहरू उस समय चाहते तो अपनी लोकप्रियता के बल पर तानाशाही का रास्ता भी अपना सकते थे, क्योंकि सभी देशी राज्यों में कांग्रेस पार्टी की ही सत्ता थी, विपक्ष विहीन मंत्रालय उनके पास था। लेकिन नेहरू ने लोकतंत्र का रास्ता अपनाया और वह एक उदारवाद, समाजवाद, आर्थिकवाद, धर्मनिर्पेक्ष, गुटनिरपेक्ष, मानवतावाद के सिद्धांत पर चलते हुए विकासवादी योजनाओं के बल पर फिर से भारत के नवनिर्माण में अपना खून पसीना बहाकर देश को प्रगति के मार्ग पर ले आये। उन्होंने पंचवर्षीय योजनाओं, मिश्रित आर्थिक योजनाओं, बहुउद्देशीय नदीघाटी परियोजनाओं, कृषि योजनाओं, भारी औद्योगिक योजनाओं के बल पर भारत को एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण भी प्रदान किया और भारत के लोगों को बैलगाड़ी से उठाकर वायुयान, रेल, और मोटरकारों में बैठा दिया। साथ ही साथ एम्स जैसे मेडिकल संस्थान देश को समर्पित किये, जो आज भी प्रथम श्रेणी के मेडिकल संस्थान माने जाते हैं।[13]

आर0सी0 गुहा ने कहा है कि " Nehru was without question the chief architect of our democracy. It was he, more than any other nationalist who promoted universal franchise and the multiparty system"[14]

जब भारत आजाद हुआ, तो भारत में 14 प्रतिशत साक्षरता थी। 1952 के चुनाव में सभी को वोट देने का अधिकार देकर सभी को भारतीयता का पाठ पढ़ाने वाले पहले व्यक्ति नेहरू ही थे। वे बच्चों से बहुत प्रेम करते थे, इसलिये उन्हें चाचा नेहरू कहकर पुकारा जाता था। इसी उपलक्ष्य में 14 नवम्बर को बाल–दिवस मानाया जाता है। सन् 1955 में नेहरू जी को भारत रत्न से सम्मानित किया गया था। उनके द्वारा लिखित बहुत–सी उत्कृष्ट किताबें हैं, जिनको पढ़कर भारत की विशालता और देशप्रेम का संचार होता है।

नेहरू जी ने व्यवस्थित रूप से अनेक पुस्तकों की रचना की है, जिनमें (1) पिता के पत्र पुत्री के नाम–1929, (2) विश्व इतिहास की झलक दो खण्डो में–1933, (3) आत्मकथा मेरी कहानी–1936, (4) भारत की खोज–1945, (5) जवाहर लाल नेहरू की वांग्मय ग्रन्थ माला खण्ड पाँच, (साहित्य सस्ता मण्डल नई दिल्ली प्रथम संस्करण 1976 में प्रकाशित) हैं। नेहरू ने अपने राजनीतिक जीवन के व्यस्ततम संघर्षपूर्ण दिनों में लेखन हेतु समय के नितांत अभाव का हल यह निकाला कि जेल के लम्बे नीरस दिनों को सर्जनात्मक बना लिया जाये। इसलिये उनकी अधिकांश पुस्तकें जेल में ही लिखी गयीं और उनकी किताबों ने लोकप्रियता के अलग प्रतिमान रचे हैं, जिन पर आधारित उत्तम धारावाहिक का निर्माण तक हो चुका है। प्रगतिशील वसुधा के सुप्रसिद्ध सिनेमा विशेषांक में कहा गया कि ''भारत की एक खोज'' 1988 धारावाहिक टी.वी. पर एक ऐसी कृति है, जिसका आज बीस साल बाद भी कोई मुकाबला नहीं है।[15]

नेहरू की लिखित इन पुस्तकों ने भी भारतवासियों में एक नवीन चेतना का विकास किया, जो राष्ट्रनिर्माण में सहयोगी साबित हुईं।

उपरोक्त किताबों से पता चलता है कि नेहरू शांतिवादी, राष्ट्रवादी, मानवतावादी, दार्शनिक एवं उच्चकोटि के शिक्षाविद् व लेखक थे। नेहरू के कार्य ही देश के लिए सबसे बड़ी पूंजी हैं।

नेहरू के योगदान को देखते हुए The Newyork Times ने उनको आधुनिक भारत का निर्माता कहा था। 30 May 1964 में प्रकाशित The Economist के कवरिंग पेज पर इनकी मृत्यु के बाद लिखा गया था "The World Without Nehru" vkSj Quoted "It Recalled is all most megical grip on the masses and regretted that the world stage would be poorer without the great man."

निष्कर्ष :–

उपरोक्त विश्लेषण करने के बाद मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि देश के बंटवारे के लिए जितनी मुस्लिम लीग जिम्मेदार है, उतनी ही हिन्दू महासभा भी जिम्मेदार है। यह कहना कि पण्डित नेहरू की सोच विभाजनकारी थी और इसके पीछे उनकी प्रधानमंत्री बनने की लालसा देश के बंटवारे के लिए उत्तरदायी है, बिल्कुल गलत है, क्योंकि नेहरू प्रारम्भ से ही देश को बांटना नहीं चाहते थे। इसलिए कांग्रेस के एजेण्डे में कभी देश का बंटवारा था ही नहीं, और लोगों का उनके और गांधी जी के बारे में भ्रम फैलाना कि देश का बंटवारा इन दोनों लोगों की वजह से हुआ, संकीर्ण मानसिकता वाले लोगों की नकारात्मक सोच का नतीजा है। नेहरू ने कभी भी जिन्ना के सामने घुटने नहीं टेके। वह हमेशा देश को जोड़े रखने के लिए प्रयत्न करते रहे, बल्कि देश के बटवारे के लिए मुस्लिम लीग एवं हिन्दू महासभा ही जिम्मेदार हैं। नेहरू के बारे में जो लोग कहते हैं कि उन्होंने पाकिस्तान बनवाया, वे सब नेहरू की शख्सियत को बदनाम करके अफवाह और भ्रम फैला रहे हैं, जिसका सत्यता से कोई लेना–देना नहीं है।

: सन्दर्भ सूची :

1. वरिष्ठ पत्रकार हरजिन्दर का लेख, दा हिन्दुस्तान टाईम्स, दिनांक 21.01.2022, पृष्ठ 11
2. नेहरू जी की आत्मकथा मेरी कहानी, पृ0–4
3. वही, पृ0–6

4. आधुनिक भारत का इतिहास लेखक राजीव अहीर संशोधित संस्करण 2021–स्पेक्ट्रम बुक प्रा०लि० जनकपुरी नई दिल्ली। मुख्य सम्पादक–कल्पना राजाराम–के पृष्ठ नं० 325 से पृष्ठ नं० 339 तक एवं पृष्ठ नं० 353 से 375
5. आधुनिक भारत का इतिहास लेखक राजीव अहीर संशोधित संस्करण 2021–स्पेक्ट्रम बुक प्रा०लि० जनकपुरी नई दिल्ली। मुख्य सम्पादक–कल्पना राजाराम–के पृष्ठ नं० 530 एवं 531 तक
6. उपरोक्त पुस्तक के पृष्ठ नं० 530, एवम् पृष्ठ नं० 531
7. उपरोक्त पुस्तक के पृष्ठ नं० 728 से पृष्ठ नं० 746 तक
8. Vide, Writings, Swatantrya Veer Savarkar, Volume 6 Pg. No. 296, Maharastra Prantiya Hindu Maha Sabha, Pune.
9. Vide-Indian Educational Register, 1999, Volume 2, Pg. No. 10
10. भारतीय इतिहास, सप्तम् संस्करण 2012, प्रधान सम्पादक वी.के. अग्निहोत्री, एलायड प्रकाशन प्रा०लि०, नई दिल्ली, पृष्ठ नं० 254
11. 02.10.2019 के डी.डब्ल्यू न्यूज़ में प्रकाशित समाचार आर्टिकिल पर आधारित।
12. भारतीय इतिहास, सप्तम् संस्करण 2012, प्रधान सम्पादक वी.के. अग्निहोत्री, एलायड प्रकाशन प्रा०लि०, नई दिल्ली, पृष्ठ नं० 256
13. आधुनिक भारत का इतिहास– प्रधान सम्पादक, शिवकुमार ओझा, बोद्धिक प्रकाशक, श्रीराम भवन झूंसी, प्रयागराज, चतुर्थ संशोधित संस्करण 2021–22, पृष्ठ नं० 376 से 390
14. द वायर न्यूज़ 08.02.2018 और 14.11.2022 में प्रकाशित आर.सी.गुहा का लेख।
15. प्रगतिशील वसुधा सिनेमा विशेषांक, अंक 81 अप्रैल–जून 2009। अतिथि सम्पादक प्रहलाद अग्रवाल पुस्तक के रूप में, साहित्य भण्डार 50 चाहचन्द रोड, इलाहाबाद से प्रकाशित, पृष्ठ नं० 383

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

SHIKSHA SAMVAD

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed or Refereed Research Journal
ISSN: 2584-0983 (Online) Impact-Factor, RPRI-3.87
Volume-02, Issue-01, Sept.- 2024
www.shikshasamvad.com
Certificate Number-Sept-2024/12

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

मृदुला शर्मा और डॉ0 राजकुमार

For publication of research paper title

"आधुनिक भारत के निर्माता पं0 जवाहर लाल नेहरू का एतिहासिक चिन्तन"

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-02, Issue-01, Month September, Year- 2024, Impact-Factor, RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.shikshasamvad.com